बालकजी के इस पत्र का मन उत्तर दिया....

श्रीमान् दादासाहब,

सप्रेम नमस्कार,

आपकी चिट्ठी मिली. अंतरतम से व्यक्त आपकी भावनाओं को मैं अपने लिए आप जैसे तपस्वी की शुभाशीष मानता हूं.

आपकी हार्दिक भावनाओं से मैं भी गदगद हो गया हू. बहुत सन्तोष अनुभव कर रहा हूं. यह सच है कि मुझे अपने बारे में ऐसा लिखा जाना कतई भाता नहीं. किन्तु आपकी भावनाओं की गहराई देख कर प्रांजलता से स्वीकार करता हूं कि ऐसे सार्थक शब्दों की आवश्यकता आदमी को जिन्दगी में अवश्य महसूस होती है. आपके शब्दों ने मुझे वह सन्तोष प्रदान किया है, जो लाखों रुपए खर्च करने पर भी नहीं मिल पाता.

इस समय मैं बहुत जल्दी में हूं. नया चित्रपट सम्पन्न करने की दौड़धूप कर रहा हूं. अभी-अभी आज का काम समाप्त कर थका-मांदा ऊपर आया और मेज पर रखा आपका पत्र खोल कर पढ़ा. बहुत अच्छा लगा.

किन्तु, आपको विजयादशमी के दिन मिले ऐसा प्रबंध कर आपको पांच रुपए भेजने, और उन्हें पूजाघर में रख कर पूजने की जो बात आपने लिखी है, मुझे कुछ अजीबोगरीब लगी. आपको पांच रुपए भेजूं, या न भेजूं यह दुविधा भी मन में जाग गई. किन्तु आपकी भावनाओं का आदर करने के लिए मैंने तय किया है कि आपको वे पांच रुपये (और साथ ही कुछ और रकम भी) भेजूंगा. फिर भी आपसे प्रार्थना है कि आप उसे पूजाघर में रखकर पूजा का सम्मान न दें. हां, आपने अपने पत्र में मेरे प्रति जो भावनाएं व्यक्त की हैं, मैं उन्हें प्राप्त आशीर्वाद के रूप में अपने पूजाघर में अवश्य रख रहा हूं.

(व्ही. शांताराम)